सत्ता का प्रतिरोध और सिनेमा

प्रकाश झा निर्देशित फिल्म : आरक्षण ,चक्रव्यूह, सत्याग्रह

शोध सारांश:

भारतीय सिनेमा ने जनमानस कि स्मृति पर एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, जिसका कारण सिर्फ मनोरंजन ही नहीं है बल्कि सामाजिक समस्याओं में छिपे कारकों और यथार्थों का समय- समय पर उद्घाटन भी है। सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार फ़िल्में अपनी सम्प्रेषणीयता के हुनर से लोगों की चेतना को सजक करती है, जिसमें मुख्यतः मौलिक अधिकार, समस्याओं का विवेचन और सामाजिक वास्तविकता है। यह सभी फ़िल्में समाज में व्याप्त उन समस्याओं को प्रदर्शित करती हैं जिनके पीछे एक बड़ी सत्ता का प्रभाव होता है। वह सत्ता राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक बल, पितृसत्ता, पूंजीवाद, फासीवाद, और अन्य किसी भी प्रकार से देखीं जा सकता है। इन सत्ता रुपी समस्याओं के प्रतिरोध में सिनेमा का योगदान अति प्रासंगिक रहा है। वर्तमान में साहित्य के बाद सिनेमा का योगदान महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसमें मात्र संवाद ही नहीं घटना का दृश्यात्मक साक्षात वर्णन मिलता है। मनुष्य का स्वभाव रहा है कि पढ़ने और सुनने से ज्यादा दृश्यात्मक अवलोकन से अधिक सीखता- समझता है। प्रस्तुत फिल्मों में उठाये गये विषय कहीं न कहीं सामाजिक अध्ययन के लिए भी अति महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शान्ति शोध के नजरिये से सिनेमा के उन्हीं विषयों को शोध का आधार बनाया है, जो प्रत्यक्षता समाज के किसी न किसी विमर्श में उपस्थित है। प्रस्तुत शोध में पुस्तक, पत्रिकाओं, इंटरनेट, समाचार का अध्ययन किया गया है जिसमें चयनित फिल्मों को अवलोकन भी है। शोध प्राथमिक एवं द्वितीय आंकड़ो पर आधारित है। स्वतंत्र रूप से इस शोध में गुणात्मक और मात्रात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। यह गुणात्मक शोध के अंतरगत एकांश (item) विश्लेषण की इकाई के तहत चयनित फिल्मों का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है, जिससे पांच बंद मापनी प्रश्नावली से प्राप्त आकड़ों का माध्य निकालकर तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

शोध आधारित फिल्मों के विषयवस्तु विश्लेषण और प्राथमिक आकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि फ़िल्में समाज का एक अंग है, जो सामाजिक संस्था के रूप में कार्यरत है। आरक्षण, चक्रव्यूह सत्याग्रह यह तीनों फिल्म यथार्थवादी परिदृश्य उद्घाटित करती है। इन फिल्मों ने घटना स्थल की संवेदनाओं को भलीभांति दर्शकों तक पहुँचाया है। फिल्म में शक्ति और सत्ता का प्रदर्शन धर्म सत्ता, राज सत्ता और पूंजी सत्ता के रूप में मिलता है। शोध परिणाम दिखाते है कि आरक्षण , चक्रव्यूह, सत्याग्रह फिल्म तात्कालिक समस्या पर प्रतिरोधी प्रहार करती है, जिसमें वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था, मानव अधिकार और आधुनिकता जैसे मुद्दों पर कटाक्ष किया गया है। तीनों फिल्मों का आधार व्यवस्था परिवर्तन के लिए प्रेरित करतीं हैं।

प्रतिरोधीवादी सिनेमा समाज के एक प्रतिक्रियावादी व्यवहार का पक्ष जरूर है, जिसके कारणों की खोज एक अलग शोध का हिस्सा हो सकती है। किन्तु जब इनके प्रकार्यों के दर्शन पर दृष्टि डाले तो शांति और विकास के अंतर्द्वंद है। इसकी प्रवचना के लिए जिम्मेदार तत्व के रूप देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द: सत्ता, प्रतिरोध, सिनेमा

Resistance of Power and Cinema

Directed Film Prakash Jha : Arakshan, Chakravyuh, Satyagrah

Abstract :

Indian cinema has received an important place in the memory of people. Its reason is not only entertainment but also disclosure of causes & reality behind social problems. In accordance to social situation, films alert people's conscience through its communication skill. These are chiefly fundamental rights, interpretation of problems & social reality. These films demonstrate those problems behind which a great power has influence. This power can be seen as political, social, economic force, paternity, capitalist, fascist or in any other form. In opposition to such problems in form of power, the contribution of cinema is quite relevant. At present, contribution of cinema is in important role and is only next to literature, where not only dialogues, but exact pictorial descriptions of event are also there. It is human nature that he more learns & understands through visual observation rather than only reading & listening. Problems raised in such films are somewhere relevant to social study. In the present research study, from the perspective of peace research, such subjects of cinema are made research base which are directly present in any debate of society. In the present research, relevant books, magazines, internet and papers are studied including observation of selected movies. Research is based on primary and secondary data. In the research, qualitative & quantitative methods of research are used

freely. Under the item analysis of qualitative research, content analysis of selected films is done. In the study self-constructed questionnaire is used in which through mean of received data of five scales closed questionnaire comparative analysis is done.

From the observation of the content analysis & primary data of the research based on films are acknowledged that films are the part of society which works in form of social organization. 'Arakshan', 'Chakravyuha' and 'Satyagraha' are disclosing the real background. These films soundly conveyed the sensitivities of incident place up to the spectator. Demonstration of powers is found in forms of power of religion, power of state and capital power. Research result has shown that films 'Arakshan', 'Chakravyuha' and 'Satyagraha' are making resistance attacks on contemporary problems in which such issues as present education system, class system, human rights and modernity are satirized. All three films are inspiring to change the fundamental system.

Society of resistant cinema is definitely an aspect of reactionary behavior whose search of root causes can be a part of another research. But when looks into the philosophy of cause- effect, it is internal clash of peace and development. Responsible factors can be seen for its interpretation.

Key words: Power, Resistance, Cinema